# आर्यसमाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सबका आदि मूल परमेश्वर है ।

2. ईश्वर सच्चिदान्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालू, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अभय, नित्य, पवित्र, और सृष्टीकर्ता हे उसी की उपासना करनी योग्य है ।

3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढना-पढना और सुनना-सुनना सब आयो का परम धर्म है ।

4. सत्य के ग्रहण करने और सत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक आत्मिक और समाजिक उन्नति करना ।

7. सबसे प्रीतीपुर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए ।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृध्दि करनी चाहिए ।

9. प्रत्येक को आपनी ही उन्नति मे संन्तुष्ट करनी चाहिए ।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम से सब स्वतन्त्र रहें।